लेखक के बारे में

कृष्णा कुमार पाठक का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद के तातारगंज जसरा में हुआ| आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव से ही हुई, आगे की शिक्षा देश के अलग अलग शहरों के विश्वविद्यालय से B.A., M.A. (SANSKRIT), Care Giver (Multy Disability), B.Ed.(H.I.), PGPD(V.I.), M.Ed.(H.I.) की उपाधि और UP.TET, CBSC -CTET, UGC NET (EDUCATION) की पात्रता प्राप्त की|वर्तमान समय में गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत है| "समावेशी भाषा एंव संप्रेषण" को ठीक तरह से जानकर श्रवण बाधित विद्यार्थी की शैक्षिक अनुकरण करके एवं उनकी भली –भांति समायोजन एवं उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु "समावेशी भाषा एंव संप्रेषण" की आधारभूत बातों के विषयों पर महत्वपूर्ण योगदान होगा| यह पुस्तक विभिन्न विद्यालयों एवं शिक्षण ,प्रशिक्षण संस्थानों के विशेष शिक्षा में डी.एड.,बी.एड., एम.एड. के साथ साथ सामान्य शिक्षा के विद्यार्थी, अभिभावकों एवं पुनर्वास व्यावसायिकों को शिक्षण प्रशिक्षण में मददगार सिद्ध होगी|

Published by:

Renova International Publications

RENOVA

ISBN: 978-93-90142-31-6

renovapublications@gmail.com

GST No.-07BJRPA8398G1ZN

Price : ₹ 500

Contact- 8287036186

RENOVA Renova International Publications

भाषा और संप्रेषण

कृष्ण कुमार पाठक

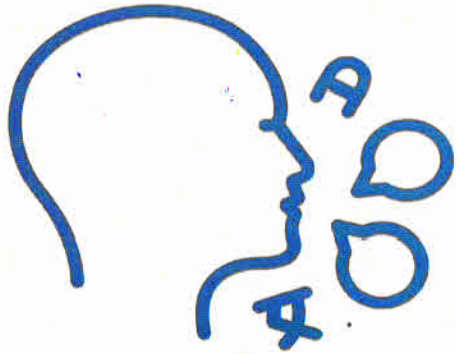

आरसीआई नवीनतम पाठ्यक्रम

रीनोभा इन्टरनेशल पब्लिकेशन्स
बी. 39, प्रथम तल आरूना नगर,
सीबिल लाईनस, नई दिल्ली–110013
फोन न. :– 09910465522, 9953776001
ईमेल :– renovapublications@gamil.com

भाषा और सम्प्रेषण

प्रथम संस्करण : 2024

कॉपी राइट © लेखक

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी त्रुटि के लिए प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा, इस पुस्तक को अथवा इसके अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के किसी भी रूप–फोटोग्राफी, विद्युत–ग्रफिक यान्त्रिकी अथवा अन्य रूप में किसी भी प्रकार से उपयोग के लिए नहीं छापा जा सकता है...

भारतमेंमुद्रित

रीनोभा इन्टरनेशल पब्लिकेशन्स, बी. 39, प्रथम तल आरूना नगर, सिविल लाईनस, नई दिल्ली–110054, द्वारा प्रकाशित; टाईप सेटिंग महक ग्राफिक्स, दिल्ली, शब्द–संयोजन, राजूरिया प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

भूमिका

सम्प्रेषण का अर्थ है कि दो दो या से अधिक जीवित व्यक्तियों में परस्पर सम्पर्क अर्थात वह सूचना का आदान प्रदान करना है जो समस्त जीवो को एक कड़ी से जोड़ता है। मनुष्य और पशु दोनो के ही जीवन में सम्प्रेशण का मुख्य स्थान है। क्योकि प्रत्येक जीव में सूचना पहुचाने और सूचना प्राप्त करने की क्षमता होती है। परन्तु मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो भाषा के शाब्दिक रूप के माध्यम से अर्थपूर्ण सम्प्रेषण के द्वारा परस्पर सम्पर्क बनाये रखने की प्रक्रिया दर्शाता है। भाषा के माध्यम के द्वारा ही सम्प्रेषण की अभिव्यक्ति होती है।

मानव के सम्बन्धो को प्रगाढ़ बनाने के लिए भी सम्प्रेषण बहुत उपयोगी है। तथा उन की इच्छाओ को सन्तुष्ट करने में भी सहायक हैं। सम्प्रेषण की प्रथमिक विधि सुनना और बोलना है। हम निर्देश सलाह एवं परामर्श का प्रयोग करके अपने चारो ओर नये–नये विचारो को सुनते है। और दूसरो के द्वारा नये ज्ञान प्राप्त करते है।

–कृष्ण कुमार पाठक

अनुक्रमणिका

भूमिका (v)

Unit-1:

सम्प्रेषण और भाषा (Communication & Language) 1

1.1 सम्प्रेषण : परिभाषा, अर्थ और क्षेत्र (Communication: Definition, Meaning and Scope) 1

1.2 सम्प्रेषण का वर्गीकरण: शाब्दिक सम्प्रेषण और अशाब्दिक सम्प्रेषण (Classification of Communication: Linguistic and Non-linguistic) 6

1.3 भाषा: परिभाषा, विशेषताएं और कार्य (Language: Definition, Characteristics and Functions) 14

1.4 विशिष्ट बच्चों में भाषा विकास के चरण (Phases of Language Developmental in Typical Children) 24

1.5 भाषा विकास के लिए पर्वू आवश्यकताएं (Pre-requisites for Language Development & Impact of Deafness) 33

Unit-2:

शाब्दिक सम्प्रेषण के तरीके (Modes and Methods of Linguistic Communication) 37